तारतम पख दूजा कोई नहीं, बिना साथ सब सुपन।
जो जगाऊं माया झूठी कर, धाख रहे जिन मन।। १६४ ।।

तारतम से विचार कर देखा जाए तो सुन्दरसाथ के बिना दूसरा कोई है ही नहीं, अर्थात् सब सपना है। यदि जगाए बिना तुम्हें घर ले चलें तो तुम्हारी इच्छा ज्यों की त्यों बनी रहेगी। मैं यह नहीं चाहती।

हद के पार बेहद है, बेहद पार अछर।
अछर पार वतन है, जागिए इन घर।। १६५ ।।

हद (माया का संसार-क्षर ब्रह्माण्ड), बेहद (योगमाया का ब्रह्माण्ड) अक्षर (बेहद के पार श्री राजजी का सत अंग-अक्षर धाम) तथा अक्षर के पार अपना घर परमधाम है, जहां जागना है।

ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊं।
कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊं।। १६६ ।।

माया की तथा घर (परमधाम) की दोनों की हकीकत तुमको अलग-अलग समझा दी है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस तरह से सुन्दरसाथ को हंसते-खेलते जगाऊंगी और इस माया के ब्रह्माण्ड को उड़ाऊंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ ९५४ ॥

दूध पानी का निबेरा
राग सामेरी

हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो।
तीनों कांडों बड़ा सुकदेव, ताकी बानी को कहूं भेव।। १ ।।

हे परमधाम के प्यारे सुन्दरसाथ! तुम कमर बांधकर खड़े हो जाओ और अपनी सुरता (ध्यान) को धनी के चरणों में लगा दो। कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों काण्डों में शुकदेवजी का ज्ञान बड़ा है। उनकी वाणी की हकीकत मैं बताती हूं।

बिन पूछे कहूं विचार, निज वतनी जो निरधार।
जिन कोई संसे तुमें रहे, सो मेरी आतम ना सहे।। २ ।।

हे परमधाम के साथियो! मैं तुमको तुम्हारे पूछे बिना ही बता रही हूं, ताकि तुम्हारे अन्दर यदि संशय रह गया, तो मेरी आत्मा सहन नहीं करेगी।

एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पांउ कुंजर बंधाए।
तिनके पर्वत ढांपिया, सो तो काहूं न देखिया।। ३ ।।

यहां ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर से हाथी बंध गया तथा तिनके ने पर्वत को ढक लिया, किन्तु उसे किसी ने देखा नहीं।

चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताकी काहूं ना परी कल।
सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे।। ४ ।।

चींटी हाथी को खा गई इसकी भी जानकारी किसी को नहीं हुई। सनकादिक ऋषियों ने ब्रह्माजी से पूछा कि क्या जीव और मन इकट्ठे रहते हैं?

Nijanand App

ए भेले हुए हैं आद, के भेले हैं सदा अनाद।
कहे ब्रह्मा भेले नाहीं तित, ए आए मिले हैं इत।।५।।

यह दोनों यहां आकर मिले हैं या पहले से ही इकट्ठे हैं? ब्रह्माजी उत्तर देते हैं कि यह दोनों मूल में इकट्ठे नहीं थे, यहां आकर मिले हैं।

तब सनकादिके फेर यों कह्यो, तो ए जुदे करके देओ।
फेर ब्रह्मांऐ करी फिकर, तब देखे वचन विचार चित धर।।६।।

तब सनकादिक ने फिर से पूछा कि इनको अलग-अलग करके बताओ। फिर ब्रह्मा जी सोचने लगे और चित्त से विचार कर बोले।

ए समझ मुझसे ना होए, क्यों कर करों जुदे मैं दोए।
तब सरन विष्णु के गए, अंतरगतें वचन कहे।।७।।

यह व्योरा मेरे से नहीं होगा। इन दोनों को (मन और जीव को) अलग नहीं कर सकता। तब वह भगवान विष्णु की शरण में गए और मन ही मन में विष्णु से पूछा।

बैकुंठ नाथे सुने वचन, हंस होए आए ततखिन।
हंसे रूप धर्यो सुन्दर, लिए सनकादिक के चित हर।।८।।

भगवान विष्णु इन वचनों को सुनकर हंस रूप होकर आए। हंस के मोहिनी रूप ने सनकादिक के मन को हर लिया।

जीवें हंससो करी पेहेचान, चारों चरन लगे भगवान।
फेर मनें यों कियो विचार, ले नजरों देख्या आकार।।९।।

जीव ने हंस के रूप में भगवान विष्णु को पहचान लिया और चारों ने हंस रूप भगवान के चरणों में प्रणाम किया। फिर मन ने विचार किया और हंस के रूप को देखकर संशय हो गया।

जो जीवें करी पेहेचान, सो मनने तबही दई भान।
फेर सनकादिकें यों पूछिया, तुम कौन हो यों कर कह्या।।१०।।

जीव ने तो ठीक पहचान की थी, परन्तु मन ने उसे उलट दिया और हंस को पक्षी समझा। फिर सनकादिक ने हंस से पूछा कि तुम कौन हो?

तब हंसे कियो जवाब, समझे सनकादिक भान्यो वाद।
चित किये चारों के धीर, पर न हुए जुदे खीर नीर।।११।।

तब हंस ने जवाब दिया, हे सनकादिक ऋषियो! तुम समझे नहीं। तुम्हारे संशय मिटाए हैं। इस तरह से चारों के मन को स्थिर कर दिया, किन्तु इस दृष्टान्त से जीव और मन की पहचान नहीं हुई।

आओ हंस या और कोए, पर कोई जुदे कर ना देवे दोए।
दोऊ के जुदे बासन, यों कबहूं ना किए किन।।१२।।

अब श्रीजी कहते हैं कि यहां भगवान विष्णु (हंस रूप) या और कोई भी आओ, परन्तु जीव और मन को कोई जुदा नहीं कर पाया। इन दोनों के मूल घर ही अलग-अलग हैं, जिनको किसी ने नहीं जाना।

अब याकी कहूं समझन, जुदे कर देऊं जीव और मन।
समझ के पेहेचानों जिउ, निज वतन जो अपना पिउ।।१३।।

स्वामीजी कहते हैं कि इसे मैं समझाता हूं तथा जीव और मन को अलग करके बताता हूं। जीव से पहचान कर अपने घर और धनी की पहचान करो।

Nijanand App

नहीं राखों तुमें संदेह, इन चारों का अर्थ जो एह।
जो कोई साध पूछे क्यों, ताए सास्त्र सब केहेवे यों।। १४ ।।

अब स्वामीजी कहते हैं कि इन चारों बातों का (चींटी हाथी निगल गई, चींटी के पैर में हाथी बंध गया, तिनके ने पर्वत ढका, चींटी के मुख में कुम्हड़ा आ गया) मैं तुम्हें भेद खोलकर बताता हूं, ताकि तुम्हारे मन में कोई संशय न रहे। यदि कोई पूछे ऐसा क्यों? तो कहना यह सब शास्त्रों में लिखा है।

अकल अगम बैकुंठ का धनी, ए थोड़ी अजूं करे घनी।
इन करते सब कछू होए, पर ए अर्थ ना देवे कोए।। १५ ।।

बैकुण्ठ के मालिक विष्णु भगवान की बुद्धि तेज है। इन्होंने थोड़े में ही बड़ी बात को समझा दिया अर्थात् हंस रूप होकर जीव और मन का भेद समझा दिया। इसकी शक्ति से संसार में सब सिद्ध हो सकता है, पर इन अर्थों से कोई समझता नहीं।

यों धोखा रह्या सब मांहें, समझ काहूं ना परी क्यांहें।
अब समझाऊं देखो बानी, दूध विछोड़ा कर देऊं पानी।। १६ ।।

इस तरह संसार के सभी लोगों के बीच धोखा (संशय) बना है। किसी को इन चारों की हकीकत का पता न चला। स्वामीजी कहते हैं कि अब मैं इस वाणी से समझाता हूं तथा जीव और मन को जुदा-जुदा करता हूं।

जो तुमें साख देवे आतम, तो सत माएने जानो तारतम।
इन अंतर देखो उजास, या जीव को बड़ो प्रकास।। १७ ।।

ऐसा करने से यदि तुम्हारी आत्मा साक्षी दे तो तारतम वाणी को सत (सत्य, अखण्ड) मानना। इसके उजाले से जीव को ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

चौदे लोक उजाला करे, जो निज वतन दृष्टें धरे।
याको नूर सदा नेहेचल, नेक कहूंगी याको आगे बल।। १८ ।।

वह जीव फिर चौदह लोकों को ज्ञान देता है और परमधाम की तरफ ध्यान रखता है। इस जीव का तेज सदा अखण्ड है। इसकी ताकत का आगे चलकर वर्णन करूंगी।

ए उजाला इंड न समाए, सो इन जुबां कह्यो न जाए।
या मन को नाहीं कछू मूल, याथे बड़ा कहिए आक का तूल।। १९ ।।

इस जीव का उजाला ब्रह्माण्ड में नहीं समाता तो इस जबान से कैसे कहा जाए? इस मन का तो कोई स्थान नहीं है। इससे बड़ा तो आक (मदार) का तूल (रुई) होता है (तूआ होता है)।

तूल का भी कोटमा हिसा, मन एता भी नहीं ऐसा।
सो ए गया जीव को निगल, यों सब पर बैठा चंचल।। २० ।।

उस तूल के भी (तूआ का) करोड़वें हिस्से के बराबर मन नहीं है। ऐसा चंचल मन सब जीवों के ऊपर बैठकर जीव को अपने अधीन कर लेता है।

यों तिनके पर्वत ढांपिया, यों गज चींटी पांउ बांधिया।
जो जीव करे उजास, तो मन को आगे ही होए नास।। २१ ।।

इस तरह से मन रूपी तिनके ने पर्वत रूपी जीव को ढांपा (ढका) और इसी तरह से हाथी की तरह जीव चींटी की तरह मन के पैर में बंध गया। यदि जीव थोड़ी सी हिम्मत करे तो मन को जीत सकता है।

Nijanand App

अब या पर एक कहूं दृष्टांत, देखो आपमें वृतांत।
सुकजी के कहे प्रवान, सात सागर को काढ़्यो निरमान।। २२ ।।

अब इसके ऊपर एक दृष्टान्त देता हूं, जिसकी हकीकत देखो। शुकदेवजी के कहे के अनुसार सात सागरों का रूप गाय के बछड़े के पांव के गड्ढे के समान है।

भव सागर को नाहीं छेह, सुकजी यों मुख जाहेर कहे।
पेहेले पांउ भरे तुम जेह, कर सांचा मूल सनेह।। २३ ।।

शुकदेवजी स्वयं कहते हैं कि भवसागर अथाह है। इसका पार नहीं है, परन्तु ब्रज से रास में जाते समय धनी से सच्चा प्रेम होने के कारण सखियों ने भवसागर को गाय के बछड़े के पैर के गड्ढे के समान समझा।

सखी बेन सुन न रही कोई पल, देखियो एह जीव को बल।
इन आड़ा था मन संसार, पर जीव निकस्या वार के पार।। २४ ।।

जीव ने बांसुरी की आवाज को सुनकर धनी को पहचाना, इसलिए सखियां एक पल नहीं रुकीं। इनके मन के सामने भी संसार के झंझट थे, परन्तु जीव मन को मारकर निकल गया।

देखो पाऊं जीवने भरे, भव सागर ए क्यों कर तरे।
जाको न निकस्यो निरमान, सुकजीकी वानी प्रमान।। २५ ।।

देखो, जीव ने भवसागर किस तरीके से पार किया, जिस भवसागर का विस्तार अधिक था। शुकदेवजी की वाणी ऐसा कहती है।

सो फेर कह्यो गौपद बछ, यों भवसागर होए गयो तुछ।
एता भी न दृष्टें आया, पर लिखने को नाम धराया।। २६ ।।

शुकदेवजी ने फिर से भवसागर को गौपद समान तुच्छ (छोटा) कहा है। गोपियों को वह दिखाई ही नहीं पड़ा जिसे भवसागर कहते हैं, परन्तु लिखने के लिए भवसागर का नाम दिया है।

भव सागर क्यों एता भया, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्या।
यों मन जीवथें जुदा टल्या, तब झूठा मन झूठेमें मिल्या।। २७ ।।

भवसागर इतना छोटा कैसे हो गया? वह इसी कारण कि सखियों के जीव ने धनी को अच्छी तरह पहचान लिया और इस प्रकार मन को जीव से अलग कर दिया तथा झूठा मन झूठी माया में ही रह गया।

खीर नीर देखो विचार, एक धनी दूजा संसार।
दोऊ बासनमें दोऊ जुदे, यों नीके कर देखो हिरदे।। २८ ।।

इस तरह क्षीर (दूध) और नीर (पानी) (ब्रह्म और माया) का आप विचार कर देखो। एक तरफ धनी (क्षीर) हैं तथा दूसरी तरफ संसार (नीर) है। दोनों ही दोनों पात्रों में अलग-अलग हो गए।

अंतरगत बैठे हैं सही, अंतर उड़ावने बानी कही।
विचार देखो तो इतहीं पिउ, सागर तबहीं तूल करे जिउ।। २९ ।।

विचार कर देखो तो साक्षात् धनी अन्दर बैठे हैं और इस माया के अन्दर भ्रम को उड़ाने के लिए वाणी कही है। सोचो तो धनी यहीं हैं। जीव जागृत होने पर भवसागर को तूल (भुए) के समान समझ लेगा।

Nijanand App

तब इतहीं जो वतन पिउ पार, सखी भाव भजिए भरतार।
आतम महामत है सूरधीर, प्रेमें देखाए जुदे खीर नीर।। ३० ।।

तब पार के पार विराजमान धनी, जो यहां हैं, उन्हें अंगना भाव से भजकर (सेवा कर) प्राप्त करे। श्री महामति की आत्मा बड़ी बलशाली है, जिसने जीव और मन को अलग-अलग कर दिया।

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ ९८४ ॥

श्री भागवत को सार

सुनियो साथ कहूं विचार, फल वस्त जो अपनों सार।
सो ए देख के आओ वतन, माया अमल से राखो जतन।। १ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! मैं अपने और ज्ञान के प्रति विचार कहती हूं। इन वचनों को देखकर घर और माया के अमल (प्रभाव) से दूर रहो और अपने घर परमधाम आओ।

इन अमल को बड़ो विस्तार, सो ए देखना नहीं निरधार।
पेहेले आपन को बरजे सही, श्री मुख वानी धनिऐं कही।। २ ।।

इस माया के अमल (प्रभाव) का बड़ा विस्तार है। निश्चय करके इसे देखना नहीं। पहले ही धाम धनी ने हमको रोका था।

तिन कारन तुमें देखाऊं सार, मूल वतन के सब प्रकार।
धनी अपनों धनी को विलास, जिनथें उपज अखंड हुओ रास।। ३ ।।

इसलिए तुम्हें सार वस्तु दिखाती हूं और घर की हकीकत बताती हूं। अपने धनी और धनी के आनन्द से ही रास अखण्ड हुआ।

ए सुनियो आतम के श्रवन, सो नाहीं जो सुनिए ऊपर के मन।
वेद को सार कह्यो भागवत, ए फल उपज्यो सास्त्रों के अंत।। ४ ।।

इसको ध्यान से सुनना। यह ऐसी वाणी नहीं है कि साधारण रूप से सुन ली जाए। वेदों का सार भागवत कहा गया है, जो सब शास्त्रों के बाद में आई है।

सो फल सार सुकजीऐं लियो, सींच के अमृत पकव कियो।
ए फल सार जो भागवत भयो, ताको सार दसम स्कंध कह्यो।। ५ ।।

वेदों का सार शुकदेवजी ने ग्रहण किया तथा अपनी अमृतवाणी को सींचकर पक्का किया। इस प्रकार से यह भागवत सार-ग्रन्थ बना और इस पूरे ग्रन्थ का सार दसवां स्कंध है।

दसम के नब्बे अध्या, तिनका सार भी जुदा कह्या।
ताको सार अध्याय पैंतीस, जो बृजलीला करी जगदीस।। ६ ।।

दसवें स्कंध में नब्बे अध्याय हैं। उनका सार भी अलग से कहा है। इस सार में पैंतीस अध्याय हैं। जिसमें श्री कृष्ण की ब्रज की लीला का वर्णन है।

जगदीस नाम विष्णु को होए, यों न कहूं तो समझे क्यों कोए।
ए जो प्रेम लीला श्री कृष्णजीऐं करी, सो गोपन में गोपियों चितधरी।। ७ ।।

संसार के लोग जगदीश नाम से विष्णु भगवान को समझते हैं, इसलिए जगदीश शब्द का प्रयोग किया है। ऐसा न कहूं तो लोग समझेंगे कि श्री कृष्णजी ने जो प्रेम की लीला की है, उसे ग्वालों और गोपियों में केवल गोपियों ने चित्त में धारण किया है।

Nijanand App